सितम्बर: 2023

वर्ष : 6 अंक : 12

सिफरी मासिक समाचार

हिंदी हैं हम

नील क्रांति की ओर अग्रसर

निदेशक की कलम से

"हिन्दी सरलता, बोधगम्यता और शैली की दृष्टि से विश्व की भाषाओं में महानतम स्थान रखती है।"

– डॉ. अमरनाथ झा

सर्वप्रथम आप सभी को हिन्दी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ...

संस्थान का मासिक सितंबर 2023 आपके समक्ष प्रस्तुत है। हिन्दी को राजभाषा के रूप में स्थापित करने में डा अमरनाथ झा का विशेष योगदान है। अतः इस अंक में अगस्त, 2023 में संस्थान की गतिविधियों के साथ डा. झा का एक संक्षिप्त जीवन परिचय दिया गया है।

संस्थान में 15 अगस्त 2023 को 77 वाँ स्वाधीनता दिवस मनाया गया। इस अवसर पर निदेशक महोदय के संबोधन के साथ सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें संस्थान कर्मियों ने राष्ट्रीय भावना से ओत-प्रोत गीत और बच्चों ने गीत और नृत्य प्रस्तुत किया। संस्थान ने पुरी (ओडिशा) में दिनांक 07-11 अगस्त, 2023 को वी2वी (V2V :Vulnerability to Viability) बैठक में भाग लिया। संस्थान ने दिनांक 19 अगस्त 2023 को सस्या श्यामला कृषि विज्ञान केंद्र, सोनारपुर, पश्चिम बंगाल के परिसर में ग्रामीण महिलाओं की आजीविका विकास के लिए सजावटी मछली पालन पर जागरूकता-सह-प्रदर्शन कार्यक्रम का आयोजन किया।

शुभकामनाओं सहित,

(बसन्त कुमार दास)

राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार में डा. अमरनाथ झा का योगदान

डा. अमरनाथ झा भारत के प्रसिद्ध विद्वान, साहित्यकार और शिक्षा शास्त्री थे। वे हिन्दी के प्रबल समर्थकों में से एक थे तथा हिन्दी को बहुत ही उच्च स्तर तक ले जाने और उसे राजभाषा बनाने के लिए अमरनाथ झा ने बहुमूल्य योगदान दिया था।

डा. अमरनाथ झा

डा. अमरनाथ झा का जन्म 25 फ़रवरी, 1897 ई. को बिहार के मधुबनी ज़िले के एक गाँव में हुआ था। उनके पिता सर गंगानाथ झा, स्वर्गीय महामहोपाध्याय अनुभवी शिक्षाविद् और कुलपति, और शायद अपने दिनों में, संस्कृत के सबसे बड़े विशेषज्ञ ख्याति प्राप्त विद्वान् थे। अमरनाथ झा की शिक्षा इलाहाबाद में हुई। एम.ए. की परीक्षा में वे 'इलाहाबाद विश्वविद्यालय' में सर्वप्रथम रहे थे। उनकी योग्यता देखकर एम.ए. पास करने से पहले ही उन्हें 'प्रांतीय शिक्षा विभाग' में अध्यापक नियुक्त कर लिया गया था।

डा. झा ने सन 1903 से 1906 तक कर्नलगंज स्कूल में पढ़ाई की। सन 1913 में स्कूल उत्तीर्ण करने की परीक्षा में प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण और अंग्रेज़ी, संस्कृत एवं हिंदी में विशेष योग्यता प्राप्त की। फिर 1913 से 1919 तक वे म्योर सेंटर कॉलेज, प्रयाग में शिक्षा ग्रहण करते रहे। इन्हीं दिनों 1915 में इंटरमीडिएट में विश्वविद्यालय में चतुर्थ स्थान प्राप्त किया। फिर 1917 में बीए की परीक्षा एवं 1919 में एम.ए. की परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त किया। सन 1917 में म्योर कॉलेज में 20 वर्ष की अवस्था में ही अंग्रेज़ी के प्रोफ़ेसर और सन 1929 में विश्वविद्यालय में अंग्रेज़ी के प्रोफेसर नियुक्त हुए। वर्ष 1921 में प्रयाग म्युनिसिपलिटी के सीनियर वाइस चेयरमैन हुए और पब्लिक लाइब्रेरी के मंत्री हुए। वे पोएट्री सोसाइटी, लंदन के उपसभापति और रॉयल सोसाइटी ऑफ लिटरेचर के फेलो भी रहे। वर्ष 1938 से 1947 तक प्रयाग विश्वविद्यालय के उपकुलपति तथा वर्ष 1948 में वे अमरनाथ पब्लिक सर्विस कमीशन के चेयरमैन के तौर पर नियुक्त हुए।

उच्च पदों पर नियुक्ति

डा. अमरनाथ झा की नियुक्ति 1922 ई. में अंग्रेज़ी अध्यापक के रूप में 'इलाहाबाद विश्वविद्यालय' में हुई। यहाँ वे प्रोफेसर और विभागाध्यक्ष रहने के बाद वर्ष 1938 में विश्वविद्यालय के वाइस चांसलर बने और वर्ष 1946 तक इस पद पर बने रहे। उनके कार्यकाल में विश्वविद्यालय ने बहुत उन्नति की और उसकी गणना देश के उच्च कोटि के शिक्षा संस्थानों मे होने लगी।

बाद में उन्होंने एक वर्ष 'काशी हिन्दू विश्वविद्यालय' के वाइस चांसलर का पदभार 27फरवरी 1948 को सर सर्वपली राधाकृष्णन से प्राप्त कर सम्भाला और 5 दिसम्बर 1948 को पंडित गोविन्द मालवीय को दिया। तथा उत्तर प्रदेश और बिहार के 'लोक लेवा आयोग' के अध्यक्ष रहे।

रचनाएँ

एक कुशल वक्ता के तौर पर भी डा. अमरनाथ झा जाने जाते हैं। उन्होंने अनेक पुस्तकों की रचना की थी।

संस्कृत गद्य रत्नाकर (1920), दशकुमारचरित का संस्कृत टीका (1916), हिंदी साहित्य संग्रह (1920), पद्म पराग (1935)

शेक्सपियर कॉमेडी (1929), लिटरेरी स्टोरीज (1929), हैमलेट (1924), मर्चेंट ऑफ वेनिस (1930), सलेक्शन फ्रॉम लार्ड मार्ले (1919), विचारधारा (1954)

प्रतिभाशाली

शिक्षा जगत में डा. अमरनाथ झा के कार्य अत्यंत सराहनीय हैं इसलिए उन्हे इस क्षेत्र में एक स्तंभ के रूप में देखा जाता है। अमरनाथ जी का अध्ययन क्षेत्र विशाल था और हिंदी, संस्कृत, उर्दू, अंग्रेज़ी सभी भाषाओं के साहित्य पर उनकी गहरी पकड़ थी। 'विचारधारा' नामक हिंदी पुस्तक की समालोचना उनके इस पहलू को दर्शाता है। उनकी दक्षता केवल भाषायी तौर पर ही नहीं अपितु वे बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे – एक उच्च कोटि के शासक, एक दक्ष खिलाड़ी, बंगला भाषा में भी अध्येता, संगीत प्रेमी और चित्रकला से लगाव, आधुनिकता से प्रभावित तथा एक वैज्ञानिक विचारक। डा. झा 'नागरी प्रचारिणी सभा' के अध्यक्ष रहे तथा हिंदी साहित्य के वृहत इतिहास के प्रधान संपादक के तौर पर कार्य किया।

पुरस्कार व सम्मान

डॉ. अमरनाथ झा अनेक भाषाओं के ज्ञाता थे। इलाहाबाद और आगरा विश्वविद्यालयों ने उन्हें एल.एल.ड़ी. और 'पटना विश्वविद्यालय' ने डी.लिट् की उपाधि प्रदान की थी। शिक्षा के क्षेत्र में उनके योगदान को देखते हुए उन्हें वर्ष 1954 में 'पद्मभूषण' से सम्मानित किया गया।

हिन्दी के समर्थक

हिन्दी को राजभाषा बनाने के लिए जो आयोग बनाया गया था, उसके एक सदस्य डॉ. अमरनाथ झा भी थे। वे हिन्दी भाषा के प्रबल समर्थक थे और खिचड़ी भाषा उन्हें स्वीकार नहीं थी। डॉ. अमरनाथ झा ने अनेक अंतर्राष्ट्रीय संगठनों में भारत का प्रतिनिधित्व भी किया।

निधन

देश और समाज के लिए अपना बहुमूल्य योगदान देने वाले इस महापुरुष का 2 सितम्बर, 1955 को देहांत हो गया।

संस्थान में भारत का 77वाँ स्वाधीनता दिवस मनाया गया

भाकृअनुप-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर ने 15 अगस्त 2023 को 77वां स्वतंत्रता दिवस बड़े उत्साह के साथ मनाया। आजादी का अमृत काल के रूप में, हर घर तिरंगा अभियान 13-15 अगस्त तक संस्थान मुख्यालय बैरकपुर, कोलकाता और सभी क्षेत्रीय केंद्रों पर आयोजित किया गया था।

दिनांक 15 अगस्त 2023 को स्वतंत्रता दिवस समारोह की शुरुआत निदेशक और सुरक्षा कर्मियों के मार्च पास्ट के साथ हुई। इस भव्य कार्यक्रम में निदेशक डॉ. बसंत कुमार दास ने राष्ट्रीय ध्वज फहराया। संस्थान के निदेशक ने अपने संबोधन में भारतीय स्वतंत्रता की 77वीं वर्षगांठ के अवसर पर संस्थान कर्मियों और उनके परिवार के सभी सदस्यों को बधाई और शुभकामनाएं दीं। उन्होंने तीन प्रभागों के हाल ही में नियुक्त हुए प्रभागाध्यक्षों को बधाई दी और आशा व्यक्त की कि उनके नेतृत्व में सभी प्रभाग अगले पांच वर्षों में अधिक से अधिक उपलब्धियां हासिल करने का प्रयास करेंगे। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि भारत अगले पांच वर्षों में पांचवीं सबसे बड़ी (तीन अरब अमेरिकी डॉलर) अर्थव्यवस्था से तीसरी सबसे बड़ी (पांच अरब अमेरिकी डॉलर) अर्थव्यवस्था बनने की ओर कदम बढ़ा रहा है। उन्होंने सभी वैज्ञानिकों से भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के महानिदेशक द्वारा निर्धारित लक्ष्य अर्थात एक पेटेंट, एक उत्पाद और हाई ईम्पैक्ट फैक्टर वाले पत्रिकाओं में प्रकाशन के क्षेत्र में कार्य करने के लिए कड़ी मेहनत करने का आह्वान किया।

निदेशक ने इस बात पर प्रकाश डाला कि हमारे महानिदेशक के कुलतली दौरे से पहले, संस्थान ने विभिन्न गतिविधियों के तहत 3000 महिला मछुआरों के आजीविका उत्थान का लक्ष्य रखा था। उन्होंने भारत के विभिन्न राज्यों में एससीएसपी और टीएसपी के माध्यम से मछुआरा समुदायों की आजीविका में सुधार पर जोर दिया। पश्चिम बंगाल सरकार के साथ, सिफरी ने पहली बार कांगसवती जलाशय में पिंजरे में मछली पालन शुरू किया है।

उन्होंने यह भी कहा कि पिछले एक साल में एग्रीनोवेट इंडिया लिमिटेड के माध्यम से दो तकनीकों, सिफरी सर्कुलर केज और सिफरी केजग्रो

फीड का व्यावसायीकरण किया गया है। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि हमने पिछले एक साल में तीन पेटेंट, छह कॉपीराइट, दो ट्रेडमार्क दायर किए हैं। उन्होंने सभी संस्थान कर्मियों से संस्थान की बड़ी सफलता हासिल करने और राष्ट्रीय निर्माण के लिए 100% योगदान देने को कहा। 77वें स्वतंत्रता दिवस समारोह के लिए अधिकारी, कर्मचारी सदस्य, अनुसंधान विद्वान और संविदा कर्मचारी अपने परिवार के सदस्यों के साथ एकत्र हुए थे।

संस्थान ने 13-15 अगस्त 2023 तक मुख्यालय, बैरकपुर कोलकाता और इसके क्षेत्रीय केंद्रों में हर घर तिरंगा अभियान मनाया। केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान के सभी अधिकारियों और कर्मचारियों ने 13-15 अगस्त 2023 को हर घर तिरंगा अभियान के तहत अपने वास स्थलों पर राष्ट्रीय ध्वज फहराया।

आईसीएआर-सिफ़री द्वारा बिहार के मुजफ्फरपुर के मछली किसानों के लिए "अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी प्रबंधन" पर क्षमता निर्माण कार्यक्रम आयोजित किया गया

भाकृअनुप -केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान ने 2-8 अगस्त 2023 तक बिहार के मुजफ्फरपुर जिले के मछली किसानों के लिए "अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी प्रबंधन" पर 7 दिवसीय क्षमता निर्माण कार्यक्रम का आयोजन किया। क्षमता निर्माण कार्यक्रम में एक मत्स्य विकास अधिकारी के साथ 30 मछली किसानों ने भाग लिया। कार्यक्रम को मत्स्य निदेशालय, बिहार सरकार द्वारा प्रायोजित किया गया था।

अपने उद्घाटन भाषण में संस्थान के निदेशक डॉ. बि.के. दास ने कहा कि मुजफ्फरपुर मछली उत्पादन के मामले में बिहार के प्रगतिशील जिलों में से एक है। उन्होंने स्थायी आजीविका सुरक्षित करने के लिए मछुआरों को अन्तर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन पर अधिक ज्ञान प्राप्त करने की आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होंने मछुआरों से उत्पादन और उत्पादकता को अधिकतम करने के लिए अपने उपलब्ध संसाधनों का उपयोग करने का आग्रह किया। उन्होंने आशा व्यक्त की कि मछली किसान वैज्ञानिक मत्स्य प्रबंधन अपनाएंगे और उच्च विकास के लिए प्रयास करेंगे।

सप्ताह भर चलने वाले प्रशिक्षण कार्यक्रम में अन्तर्स्थलीय मत्स्य पालन, तालाब प्रबंधन सहित मछली पालन, प्रेरित प्रजनन, समग्र मछली पालन, सजावटी मत्स्य पालन, बाड़े में मछली पालन, मछली स्वास्थ्य प्रबंधन, जलवायु परिवर्तन और इसके प्रभाव के अलावा प्रधान मंत्री मत्स्य सम्पदा योजना की संभावनायों को शामिल किया गया। मछली किसानों को संस्थान के रीसर्क्युलेटरी एक्वाकल्चर सिस्टम (आरएएस), सजावटी हैचरी इकाइयों और मछली चारा मिल से भी परिचित कराया गया।

आईसीएआर-सीफा, कल्याणी के मछली फार्म, पूर्वी कोलकाता आर्द्रभूमि (ईकेडब्ल्यू) में अपशिष्ट जल मत्स्य पालन, बालागढ़ में हैचरी और नर्सरी सुविधाएं, सजावटी मछली बाजार और अन्य संस्थानों का दौरा भी करवाया गया।

सप्ताह भर चलने वाले कार्यक्रम का समापन 8 अगस्त 2023 को हुआ और सभी प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र वितरित किए गए। प्रशिक्षण कार्यक्रम का समन्वय श्री गणेश चंद्र और डॉ. सुमन कुमारी ने डॉ. अभिषेक साहा, श्री कौशिक मंडल, श्री सुजीत चौधरी और श्री मनबेंद्र रॉय की सहायता से किया।

सजावटी मछली पालन के माध्यम से ग्रामीण महिलाओं की आजीविका में सुधार : आईसीएआर-सिफ़री की एक पहल

महिलाएं ग्रामीण अर्थव्यवस्था की रीढ़ हैं और उनकी आजीविका में सुधार करके उनका भविष्य बदला जा सकता है । 19 अगस्त, 2023 को

पश्चिम बंगाल के रामकृष्ण मिशन के सस्या श्यामला कृषि विज्ञान केंद्र, सोनारपुर, के सहयोग से ग्रामीण महिलाओं के आजीविका विकास के लिए सजावटी मछली पालन पर वितरण सह जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया था। इस कार्यक्रम का आयोजन अनुसूचित जाति की महिलायों की आजीविका के अवसरों को बढ़ाने के लिए किया गया था। आईसीएआर- सिफ़री, कोलकाता के निदेशक डॉ. बि. के. दास द्वारा

एफआरपी टैंक और अन्य सहायक उपकरण से युक्त सजावटी मछली पालन इकाइयों को स्टार्ट अप सामग्री के रूप में वितरित किया गया। डॉ. दास ने लाभार्थियों को उनकी नियमित घरेलू कामकाज में बाधा डाले बिना ही सजावटी मछली पालन द्वारा अतिरिक्त आय करने के लिए उन्हे प्रोत्साहित किया । उन्होंने देश के पूर्वी हिस्से में सजावटी मछली पालन और इसकी निर्यात आय के अलावा घरेलू संभावनाओं और ग्रामीण स्तर पर इसके कुटीर उद्योग के महत्व पर भी जोर दिया, जो कमजोड़ वर्ग के आर्थिक सशक्तिकरण के लिए सबसे अच्छा उपाय है। सोनारपुर कृषि विज्ञान केंद्र के प्रमुख डॉ. नारायण चंद्र साहू ने लाभार्थियों को प्रौद्योगिकी को ईमानदारी से उपयोग करने की सलाह दी। उन्होंने ग्रामीण अनुसूचित जाति समुदाय की आजीविका की स्थिति को सुधारने के लिए आईसीएआर-सिफ़री द्वारा की गई पहल और कार्यों की भी सराहना की। सिफ़री टीम द्वारा लाभार्थियों के लिए सजावटी मछली पालन इकाई की स्थापना का लाइव प्रदर्शन भी किया गया। महिला लाभार्थियों को प्रेरित किया गया और उन्होंने योजना में अपनी रुचि दिखाई। कृषि विज्ञान केंद्र में प्रदर्शन सह स्टार्ट अप कार्यक्रम में कुल 22 महिला लाभार्थियों ने भाग लिया। आईसीएआर-सिफ़री और कृषि विज्ञान केंद्र के संयुक्त उद्यम में किए गए इस प्रकार के प्रयास से पश्चिम बंगाल की महिला लाभार्थियों को सफलता मिल रही हैं, उनका विकास हो रहा है और वे इसी तरह नए मुकाम प्राप्त कर रही है।

एसडीजी को संबोधित करते हुए आर्द्रभूमि मछुआरों के आजीविका विकास पर कार्यशाला आयोजित किया गया

आईसीएआर-सिफरी ने 18 अगस्त 2023 को एससीएसपी और निकरा के तहत "अंतर्स्थलीय खुले जल मत्स्य पालन के माध्यम से एसडीजी

को संबोधित करते हुए आजीविका विकास" शीर्षक से एक इंटरैक्टिव एक दिवसीय कार्यशाला का सफलतापूर्वक आयोजन किया, जिसका उद्देश्य अंतर्स्थलीय खुले जल मत्स्य पालन से संबंधित गतिविधियों को आगे बढ़ाने के तरीके पर चर्चा करना था। कार्यशाला में एससीएसपी कार्यक्रम और एनआईसीआरए परियोजना के तहत अपनाए गए पश्चिम बंगाल के मुर्शिदाबाद, नादिया और उत्तर-24 परगना जिलों के 16 आर्द्रभूमि मत्स्य सहकारी समितियों के सदस्यों, वैज्ञानिकों, तकनीकी कर्मचारियों, अनुसंधान विद्वानों और 32 मछुआरों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। 2019 से, सिफरी ने संस्कृति-आधारित मत्स्य पालन, स्टॉक वृद्धि, कलम संस्कृति आदि जैसी अंतर्स्थलीय मत्स्य पालन गतिविधियों के माध्यम से भारत सरकार की अनुसूचित जाति उपयोजना कार्यक्रम (SCSP) के तहत देश भर में अनुसूचित जाति समुदायों की आजीविका में सुधार के लिए कार्य किया। संस्थान ने सफलतापूर्वक प्रदर्शन किया है और इन आर्द्रभूमियों में पेन कल्चर तकनीक में मछली अंगुलिकाओं का यथास्थान पालन-पोषण किया जा रहा है। संस्थान ने जिन आर्द्रभूमि की सहायता उन सभी सोसायटियों को एफआरपी नावें और कोरेकल भी प्रदान किए हैं। इन कार्यक्रमों से लगभग 6000 मछुआरा लाभार्थी लाभान्वित हुए। कार्यशाला का उद्घाटन वरिष्ठ वैज्ञानिक और प्रभारी प्रशिक्षण एवं विस्तार कक्ष डॉ. अपर्णा रॉय के स्वागत भाषण के साथ हुआ, जिसके बाद प्रतिभागियों का परिचय दिया गया। पैनल चर्चा के दौरान, सिफरी के निदेशक डॉ. बि. के, दास ने मछुआरों की आजीविका विकास से संबंधित बातें कहीं। डॉ. दास ने यह भी कहा कि सिफरी भागीदारी मोड में पेन कल्चर प्रौद्योगिकी के कायाकल्प और प्रचार में सहकारी समितियों की दक्षता का आकलन करेगा, सिफरी केवल उन समितियों पर विचार करेगा जो आगे के समर्थन और सहायता के लिए कुशल पाए जाएंगे क्योंकि सिफरी ने इसके लिए इनपुट प्रदान किए हैं। यह तकनीक पिछले तीन वर्षों से लगातार अधिकांश आद्रभूमि सहकारी समितियों को एफआरपी नौका और कोरेकल प्रदान कर रही है। फीडबैक और इंटरैक्टिव सत्र में, प्रत्येक आद्रभूमि के सभी मछुआरों ने अपनी राय दी और संस्थान के प्रति आभार व्यक्त किया क्योंकि पिछले तीन वर्षों में सिफरी द्वारा दिए गए समर्थन से उन्हें अत्यधिक लाभ हुआ; मछुआरे द्वारा उठाए गए सामान्य मुद्दे हैं मैक्रोफाइट संक्रमण, जूट सड़न के कारण पानी की गुणवत्ता में गिरावट, अवैध शिकार, गाद, स्वामित्व संघर्ष, मछुआरे पहचान पत्र जारी करने में मुद्दे, अनियमित वर्षा के कारण पानी की कमी आदि। पैनल चर्चा का नेतृत्व प्रभागों के प्रभागाध्यक्ष डॉ. एम. ए. हसन, डॉ. एस. के. मन्ना, डॉ. ए. के बेरा ने किया। मछुआरों के सामने आने वाली अधिकांश आम समस्याओं के समाधान के लिए आद्रभूमि के हितधारकों के बीच आद्रभूमि उपयोगकर्ता सबसे

अच्छा विकल्प हो सकता है। निदेशक ने कहा कि प्रशासनिक क्षेत्र में सहकारी समितियों के सामने आने वाली प्रबंधकीय समस्याओं, जैसा कि मछुआरों द्वारा बताया गया है, को मत्स्य पालन विभाग, को सूचित किया जाएगा। कार्यशाला का समापन डॉ. पी. देबरॉय द्वारा प्रस्तावित औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ। इस कार्यशाला का समन्वयन डॉ. लियानथुआमलुआ, वैज्ञानिक और सुश्री टी.एन. चानू, वैज्ञानिक द्वारा किया गया।

अनुसूचित जाति परियोजना के तहत कुलतोली के ग्रामीण महिलाओं को सशक्त बनाना: आईसीएआर-सिफ़री द्वारा की गई पहल

सुंदरबन पारिस्थितिकी तंत्र साल भर अम्फान, फानी, आयला और बाढ़ जैसी प्राकृतिक आपदाओं से प्रभावित होता है, और उनके

जलस्रोतों में खारा पानी भी मिल जाता है। इस प्रकार की प्राकृतिक आपदाओं से उनकी अर्थव्यवस्था प्रभावित होती है। सुंदरबन डेल्टा क्षेत्र की अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से चावल, मछली, बीटल और मधुमक्खी पालन पर निर्भर करती है और यही इसकी रीढ़ है। आईसीएआर-सिफ़री स्थानीय समुदायों, गैर सरकारी संगठनों, एफपीओ और एसएचजी की मदद से 2019 से घर के पीछे के तालाबों में छोटे पैमाने पर जलीय कृषि का उपयोग करके उनकी आजीविका बढ़ाने में प्रमुख भूमिका निभा रहा है। पिछले 4 वर्षों में, अनुसूचित जाति और जनजाति समुदायों से संबंधित 5000 से अधिक लाभार्थियों को इस कार्यसूची से जोड़ा गया, जिन्होंने अपनी आजीविका में वृद्धि अर्जित की है। इस वर्ष मई के महीने में 5000 महिला लाभार्थियों को भी सिफ़री द्वारा इस कार्यसूची में शामिल किया गया। 20 अगस्त 2023 को, कुलतली मिलन तीर्थ सोसाइटी के सहयोग से छह गांवों (अमझारा, बसंती, रामचन्द्रखाली, उत्तर मोकाम्बेरिया, फुलमलांचा, चरविद्या) से संबंधित 100 महिला लाभार्थियों के लिए, पश्चिम बंगाल के दक्षिण 24 परगना के कुलतली में तालाब मछली पालन पर एक जागरूकता कार्यक्रम और इनपुट वितरण का आयोजन किया गया था। इस जागरूकता कार्यक्रम में सिफ़री के निदेशक डॉ. बि .के. दास, ने छोटे पैमाने के जलीय कृषि की भूमिका पर जोर दिया, जो उनके घरों के पीछे के तालाबों में सरल हस्तक्षेप के माध्यम से उनके पोषण और आजीविका को बढ़ाएगा। उन्होंने सिफ़री द्वारा की गई गतिविधियों से मिले लाभों और ग्रामीण किसानों की सफलता के बारे में भी बताया। सामाजिक कार्यकर्ता और सोसायटी के सचिव श्री लोकिमन मोल्ला ने ग्रामीण गरीबों की सामाजिक-आर्थिक स्थितियों के उत्थान में सिफ़री की भूमिका पर जोर दिया।

अनुसूचित जाति परियोजना के वैज्ञानिक और प्रभारी डॉ. लियानथुआमलुईया ने संस्थान के अनुसूचित जाति परियोजना कार्यक्रम की भूमिका के बारे में बताया। जागरूकता कार्यक्रम के बाद 100 ग्रामीण महिला लाभार्थियों को मछली के बीज और चारा के रूप में इनपुट वितरण किया गया। संस्थान की शोधार्थी डॉ. श्रेया भट्टाचार्य ने स्थानीय भाषा में संस्थान की भूमिका और उसके द्वारा किए गए कार्यों के बारे में सबको सूचित किया और इनपुट वितरण के लिए आवश्यक व्यवस्था की।

सिफ़री द्वारा पश्चिम बंगाल के कालना में 'राष्ट्रीय रैन्चिंग कार्यक्रम-2023' के तहत गंगा नदी में मछली अंगुलिमीन छोड़े गए

आईसीएआर- केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, (सिफ़री) बैरकपुर द्वारा 23 अगस्त, 2023 को पश्चिम बंगाल के कालना (पूर्वी बर्दवान जिला) के महिष्मर्दिनी घाट पर **'राष्ट्रीय रैन्चिंग कार्यक्रम-2023'** के तहत एक रैन्चिंग कार्यक्रम का आयोजन किया गया। 5 अप्रैल 2023 को नवद्वीप, पश्चिम बंगाल से इस कार्यक्रम की सूचना हुई थी। यह कार्यक्रम 3 अलग-अलग राज्यों के अलग-अलग हिस्सों में आयोजित किया गया था। अप्रैल से अगस्त, 2023 की अवधि के दौरान अब तक 27 लाख से अधिक मछली अंगुलिमीनों को गंगा में छोड़ा गया । कार्यक्रम के दौरान आईसीएआर सिफ़री के निदेशक डॉ. बि .के. दास और नमामि गंगे परियोजना के सदस्यों ने 1.56 लाख (450 ग्राम से अधिक) उन्नत भारतीय मेजर कार्प के अंगुलिमीनों को निषेचित किया।

इस कार्यक्रम में अनुसूचित जाति एवं जनजाति समुदाय से संबंधित 58 स्थानीय महिला मछुआरे और आस-पास के क्षेत्रों के मछुआरे भी शामिल हुए। कलना के महिस्मार्दिनी घाट पर स्थायी मत्स्य पालन और डॉल्फिन संरक्षण पर एक जन जागरूकता कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया। सिफ़री के निदेशक महोदय ने हमारे दैनिक जीवन में गंगा नदी के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने स्थानीय समुदाय से किसी भी प्लास्टिक और अन्य मानवजनित कचरे को नदी के पानी में नहीं फेंकने का आग्रह किया। इसके अलावा, उन्होंने स्थानीय मछुआरों को मछलियों के चारे और ब्रूड की अंधाधुंध पकड़ को रोकने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने पिछले 5 वर्षों से **नमामि गंगे** कार्यक्रम के तहत सिफ़री द्वारा की गई गतिविधियों, रैन्चिंग कार्यक्रम और जन जागरूकता कार्यक्रम के बारे में जानकारी दी । गंगा नदी के महत्व को स्थानीय मछुआरा समुदाय के बीच उजागर किया गया।

किसानों की आय दोगुनी करने के लिए खुले जल में मात्स्यिकी का प्रबंधन विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम*

मत्स्य पालन में तेजी से बढ़ते आय को देखते हुए, किसानों की आय दोगुनी करने के उद्देश्य से भाकृअनुप-केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, प्रयागराज में दिनांक 21-28 अगस्त, 2023 तक 'किसानों की आय दोगुनी करने के लिए खुले जल में मात्स्यिकी का प्रबंधन' विषय पर मत्स्य प्रशिक्षण आयोजित किया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रयागराज जनपद तथा अन्य स्थानों के मत्स्य व्यवसायों, अध्यापकों, मछुआरें तथा शोधार्थियों ने बड़ी ही उत्साह के साथ भाग लिया।

कार्यक्रम का शुभारंभ करते हुए केन्द्राध्यक्ष डॉ. धर्म नाथ झा ने प्रशिक्षणार्थियों से कहा कि हमें मछली पालन को बढ़ावा देना है और अपनी आय को दोगुना करना है। उन्होंने कहा कि मत्स्य पालन आज एक सफल लघुउद्योग के रूप में स्थापित हो रहा है। नई-नई टेकनॉलॉजी ने इस क्षेत्र में क्रांति ला दी है। आज भारत मत्स्य उत्पादन क्षेत्र में दूसरे स्थान पर है। हमारे देश में मछली पालन में सबसे पहला स्थान आंध्रप्रदेश का आता है । उसके बाद पश्चिम बंगाल और गुजरात का स्थान आता है। जनसंख्या वृद्धि के अनुपात में खाद्यान्नों के उत्पादन में

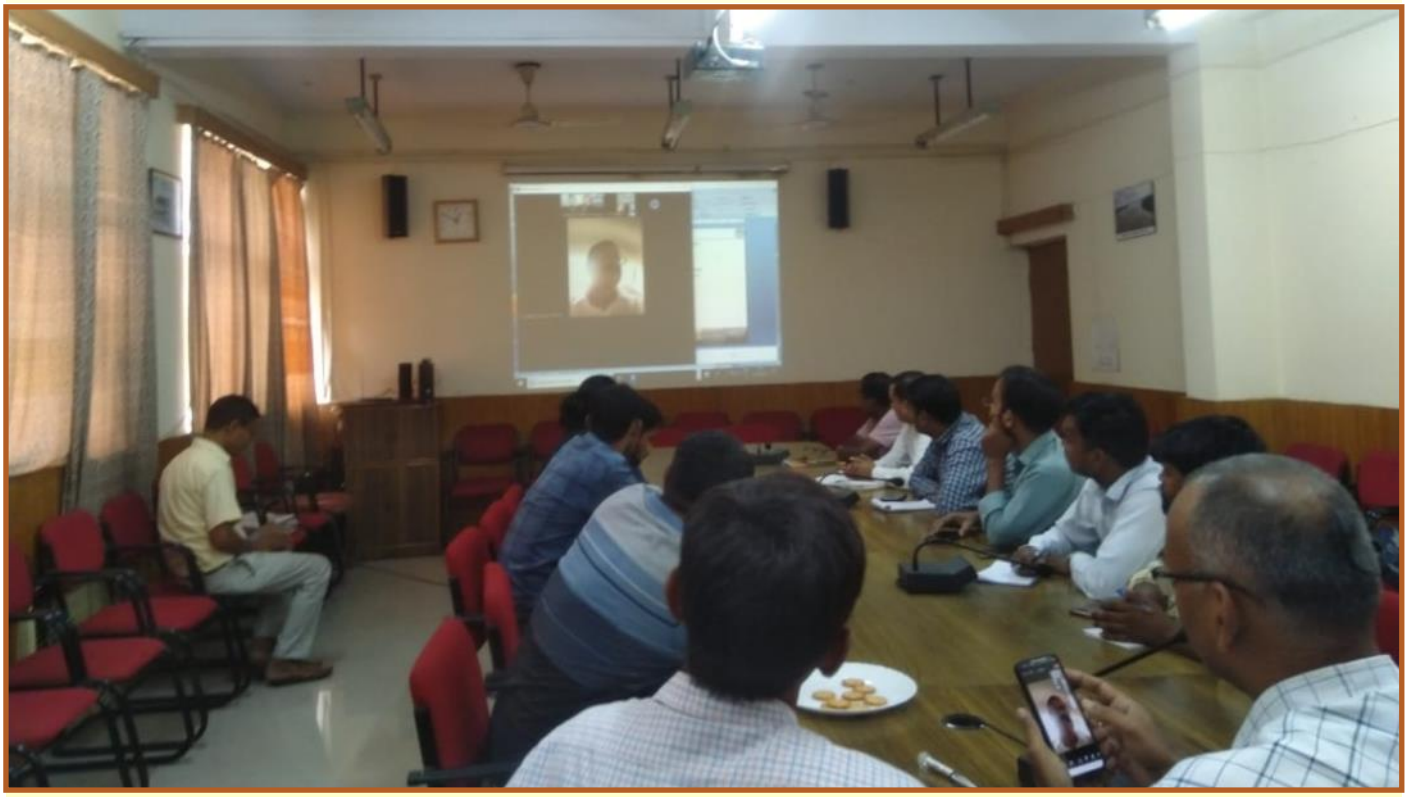

पर्याप्त वृध्दि नहीं हो रही है। हमारे भोजन में मछली की विशेष उपयोगिता है। मीठे पानी के मछली में कार्बोहाइड्रेट बहुत कम होती है और इसका प्रोटीन शीघ्र पचने वाला होता है। वैज्ञानिक तरीके से मछली पालन कर अधिक मुनाफा कमा सकते है। अगर मछली पालन व्यवसाय की तरह शुरू करना चाहते है तो सारी जानकारी इस प्रशिक्षण द्वारा दी गई।

प्रशिक्षण के दौरान 'अंतर्स्थलीय खुले जल में मात्स्यिकी की वर्तमान स्थिति और सिफरी का योगदान', 'मिट्टी और पानी की गुणवत्ता और उसके प्रबंधन का महत्व', 'अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी मत्स्य स्वास्थ्य प्रबंधन', 'एकीकृत मत्स्य पालन तथा किसानों/उद्यमियों के लिए मात्स्यिकी और जलीय कृषि में विभिन्न सरकारी योजनाएँ', पेन कल्चर, केज कल्चर, बायोफ्लाक तकनीक आदि विषय पर प्रशिक्षणार्थियों को प्रशिक्षित किया गया।

प्रशिक्षण कार्यक्रम दिनांक 28 अगस्त, 2023 को समाप्त हुआ। इस अवसर पर संस्थान के निदेशक डॉ. बसन्त कुमार दास ने प्रशिक्षणार्थियों से कहा कि जो प्रशिक्षण दिया जा रहा है उसका सभी मत्स्य व्यवसायों, मछुआरों, अध्यापकों तथा शोधार्थियों को लाभ लेना चाहिए। इससे निश्चित उनकी आय दोगुनी होगी। उन्होंने बताया कि हमें समय पर मछली का बीज तालाबों में डालना है और उसकी देखभाल करना है ताकि मछलियों को कोई बीमारी या रोग न हो। केन्द्राध्यक्ष डॉ. धर्म नाथ झा ने कहा कि वह सभी प्रशिक्षणार्थियों को हमेशा सहयोग और मार्गदर्शन के लिए उनके साथ हैं। अंत में सभी प्रशिक्षणाथिार्यों के बीच प्रमाण-पत्र का वितरण किया गया। धन्यवाद ज्ञापन के साथ प्रशिक्षण समाप्त हुआ।

अंतर्स्थलीय मत्स्य पालन डेटा विश्लेषण के लिए बुनियादी सांख्यिकी में अवधारणा निर्माण

भा.कृ.अनु.परि.- केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी में "अंतर्स्थलीय मत्स्य पालन डेटा विश्लेषण के लिए बुनियादी सांख्यिकी में अवधारणा निर्माण" पर एक प्रशिक्षण कार्यक्रम 22-24 अगस्त, 2023 तक डॉ. बि. के. दास, निदेशक, सिफरी, और डॉ. एस. के. माझी, प्रमुख, सिफरी, गुवाहाटी केंद्र के मार्गदर्शन में आयोजित किया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम में कुल 15 प्रतिभागियों ने भाग लिया, जिनमें 7 महिलाएं और 8 पुरुष शामिल थे। उपस्थित लोगों में मात्स्यिकी कॉलेज(एएयू), राहा, असम (5 प्रतिभागी), कॉटन यूनिवर्सिटी, असम (4 प्रतिभागी), शिक्षण सहयोगी (1 प्रतिभागी), गौहाटी विश्वविद्यालय, असम के रिसर्च स्कालर (2 प्रतिभागी) शामिल थे। आईसीएआर-सिफरी और आईसीएआर-सीपीसीआरआई के गुवाहाटी केंद्र से 3 युवा पेशेवर (वाईपी) भी शामिल थे ।

कार्यक्रम का उद्घाटन डॉ. एस.के. माझी ने किया। उन्होंने सांख्यिकीय बुनियादी सिद्धांतों में एक मजबूत नींव रखने और सांख्यिकीय उपकरणों के उपयोग के महत्व पर विस्तार से बताया। उन्होंने सभी प्रतिभागियों से इस विषय की व्यापक समझ हासिल करने का आग्रह किया, जिससे वे अंतर्स्थलीय मत्स्य पालन आकंड़ो के लिए उचित सांख्यिकीय तरीकों को प्रभावी ढंग से लागू करने में सक्षम हो सकें। वरिष्ठ वैज्ञानिक और कार्यक्रम समन्वयक डॉ. अनिल कुमार यादव ने प्रशिक्षण कार्यक्रम की पृष्ठभूमि और उद्देश्य के बारे में संक्षेप में बताया।

3-दिवसीय कार्यक्रम के दौरान, अंतर्स्थलीय मत्स्य पालन से संबंधित सांख्यिकीय पहलुओं की एक विस्तृत श्रृंखला को व्यापक रूप से संबोधित किया गया। इनमें अंतर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन के संदर्भ में सांख्यिकीय उपकरणों और संबंधित सॉफ़्टवेयर पैकेजों के

व्यावहारिक अनुप्रयोग शामिल थे। कवर किए गए विषयों में इस डोमेन में वर्तमान स्थिति और भविष्य की क्षमता, अंतर्स्थलीय मत्स्य पालन प्रबंधन से संबंधित डेटा की प्रकृति और उत्पत्ति, वर्णनात्मक डेटा विश्लेषण के लिए तकनीक, परिकल्पना परीक्षण और महत्वपूर्ण पैरामीट्रिक परीक्षण के मौलिक सिद्धांत, वेरिएंस के विश्लेषण (एनोवा) की खोज शामिल है। और प्रायोगिक डिजाइन पद्धतियां, महत्व के काई-स्कायर आधारित परीक्षण का उपयोग, मत्स्य पालन डेटा के विश्लेषण के लिए सरल सहसंबंध और प्रतिगमन के सार को समझना, अंतर्स्थलीय मत्स्य पालन के लिए लागू इसके मौलिक संचालन के साथ R सॉफ्टवेयर का परिचय।

समापन सत्र में, वैज्ञानिक और समन्वयक डॉ. सिमंकू. बोराह ने प्रशिक्षण कार्यक्रम की एक संक्षिप्त रिपोर्ट प्रस्तुत की। डॉ. माझी ने कार्यक्रम के सफल समापन के लिए प्रतिभागियों को बधाई दी। उन्होंने प्रतिभागियों से प्रशिक्षण के संबंध में फीडबैक मांगा। अधिकांश प्रतिभागियों ने लंबी अवधि के अधिक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करने के अनुरोध के साथ अपनी प्रतिक्रिया दी। कार्यक्रम प्रमाणपत्र वितरण और डॉ. यादव द्वारा प्रस्तावित धन्यवाद ज्ञापन के साथ समाप्त हुआ।

सजावटी मछली पालन के माध्यम से सुंदरबन की सजनेखाली इलाके के ग्रामीण महिलाओं की आजीविका में वृद्धि : आईसीएआर-सिफ़री की पहल

सजावटी मछली पालन, जिस पर भारत के माननीय प्रधान मंत्री द्वारा जोर दिया गया है और जिसे पीएमएसएसवाई स्कीम द्वारा भी प्राथमिकता दी जा रही है, ग्रामीण महिलाओं की अर्थव्यवस्था को मजबूत करने का एक उद्यम है। सजावटी मछली का व्यापार भारतीय निर्यात के साथ-साथ घरेलू बाजार में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अनुसूचित जाति उप योजना के तहत ग्रामीण महिलाओं की आजीविका बढ़ाने के लिए आईसीएआर-सिफ़री ने पहले ही पश्चिम बंगाल, झारखंड और ओडिशा सहित भारत के विभिन्न हिस्सों में सजावटी मछली पालन शुरू किया है और पश्चिम बंगाल में सजावटी मछली व्यापार की महत्वपूर्ण स्थिति का लाभ उठाते हुए, सुंदरबन क्षेत्र में महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए सजावटी मछली पालन को सक्रिय रूप से बढ़ावा दे रहा है। 20 अगस्त 2023 को, पश्चिम बंगाल के सजनेखाली में सजावटी मछली पालन

इकाई पर संवेदीकरण और इनपुट वितरण कार्यक्रम आयोजित किया गया था। कार्यक्रम का आयोजन आईसीएआर-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, कोलकाता द्वारा कमजोर वर्ग के लिए काम करने वाले एक गैर-सरकारी संगठन दिगंबरपुर अंगिकर, पाथरप्रतिमा के सहयोग से किया गया था। कार्यक्रम का उद्देश्य अनुसूचित जाति उप योजना के तहत सजावटी मछली पालन प्रौद्योगिकी के माध्यम से

ग्रामीण महिलाओं की आजीविका की स्थिति को सुधारना था। सिफ़री के निदेशक डॉ. बि .के. दास, ने सजावटी मछली पालन इकाई वितरित की जिसमें एफआरपी टैंक, एरेटर और थर्मोस्टेट, मछली, सजावटी मछली फ़ीड सहित अन्य सहायक उपकरण शामिल थे। यह पश्चिम बंगाल के सजनेखली की 50 अनुसूचित जाति की महिलाओं को वितरित किया गया। डॉ. दास ने सजावटी मछली पालन से संबंधित विभिन्न पहलुओं की व्याख्या की और इस बात पर जोर दिया कि यह लंबे समय में ग्रामीण अर्थव्यवस्था को कैसे बेहतर बना सकता है। उन्होंने उन्हें अपने परिवार की आर्थिक उन्नति के लिए इस अवसर का लाभ उठाने के लिए भी प्रोत्साहित किया। सिफ़री के वैज्ञानिक डॉ. लियानथुआमलुइया ने भारत के अन्य हिस्सों में महिला मत्स्यजीवियों द्वारा उपयोग की जा रही सजावटी मछली पालन के वित्तीय लाभों के बारे में विस्तार से बताया। डॉ. एस. भट्टाचार्य ने मछली को जीवित रखने की प्रक्रियाओं का संपूर्ण लाइव प्रदर्शन और स्पष्टीकरण किया। कार्यक्रम के समापन पर प्रत्येक लाभार्थी को बंगला भाषा में लिखी एक पुस्तिका प्रदान की गई। लाभार्थियों को प्रेरित किया गया और आजीविका में सुधार के लिए सजावटी मछली पालन को सक्रिय रूप से करने के लिए उनमें आत्मविश्वास की एक नई भावना आई। सजावटी मछली पालन गांव बनाने के लिए आईसीएआर-सिफ़री द्वारा तैयार की गई यह रणनीति महिलाओं को अपना ग्रामीण उद्योग शुरू करने के लिए प्रोत्साहित करने की दिशा में एक कदम है।

श्रीमती केया साहा, मुख्य तकनीकी अधिकारी की सेवानिवृत्ति

संस्थान मुख्यालय, बैरकपुर में कार्यरत श्रीमती केया साहा, मुख्य तकनीकी अधिकारी ने दिनांक 31 अगस्त 2023 को संस्थान की सेवा से अवकाश प्राप्त किया। श्रीमती केया साहा ने वर्ष 1987 से तकनीकी सहायक (T-II-3 : Enumerator) के तौर पर अपना कार्यारंभ किया था। इसके पश्चात सेवाकाल के दौरान उनकी कई प्रोन्नति हुई – वर्ष 1993 में तकनीकी सहायक (T-4); वर्ष 1998 में तकनीकी अधिकारी (T-5); वर्ष 2004 में वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी (T-6); वर्ष 2010 में सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी (T-7-8) तथा वर्ष 2017 में मुख्य तकनीकी अधिकारी (T-9)। श्रीमती केया साहा संस्थान के रीक्रीयेशन क्लब के साथ जुड़ी हुई हैं और पुस्तकालय सचिव के तौर पर अपनी सेवाएं दी।

संस्थान उनके अवकाशप्राप्त जीवन और उत्तम स्वास्थ्य के लिए कामना करता है।

मुख्य शोध उपलब्धियां

- दो बैग्रिड कैटफ़िश प्रजातियों *मिस्टस कैवसियस* और *मिस्टस गुलियो* के पूर्ण माइटोकॉन्ड्रियल जीनोम का पहली बार सीक्वेंसिंग किया गया है।
- मछली के रोगजनक बैक्टीरिया, *एरोमोनस वेरोनी* का पता लगाने के लिए एक एप्टामर-आधारित नैनो-बायोसेंसर विकसित किया गया है। सेंसर विशेष रूप से *एरोमोनास वेरोनी* का पता लगा सकता है और यदि *ए हाइड्रोफिला* , *स्यूडोमोनास एरुगिनोसा* और *क्लेबसिएला निमोनिया* के सह परीक्षण पर भी अन्य बैक्टीरिया के साथ कोई क्रॉस-रिएक्टिविटी नहीं दिखाता है। इस सेंसर से बैक्टीरिया कोशिका की 106 CFU/mL की सांद्रता तक का पता लगाया जा सकता है।
- कर्नाटक के गायत्री जलाशय में मछली की औसत उपज 122 कि.ग्रा./हेक्टेयर/वर्ष दर्ज की गई। एमईआई (MEI) द्वारा अनुमानित मछली उपज क्षमता 718 किलोग्राम/हेक्टेयर/वर्ष आँकलित की गई थी, जो मछली उपज क्षमता और उत्पादन वृद्धि के लिए मत्स्य पालन प्रबंधन की संभावना की ओर इंगित करता है।
- नदियों में हाइपोक्सिक तनाव के स्थानिक-लौकिक पैटर्न को देखने के लिए एक राष्ट्र-स्तरीय ऑनलाइन प्रणाली बनाई गई है, जो स्थान-विशिष्ट सूचना प्राप्त करने में उपयोगी होगा। अन्तर्स्थलीय जलीय प्रणाली में विशेष रूप से मत्स्य पालन में शामिल योजनाकार और शोधकर्ता इस सुविधा से लाभान्वित हो सकते हैं ।
- वर्ष 2018-19 से वर्ष 2020-21 के दौरान ओडिशा के कालो जलाशय में 36 टन के औसत मछली उत्पादन में छोटी स्वदेशी मछलियों (एसआईएफ) के प्राकृतिक प्रजनन का 18 से 20% का योगदान देखा गया। यह छोटे जलाशय के कुल मछली उत्पादन में छोटी स्वदेशी मछलियों के महत्वपूर्ण योगदान को बताया करती है।
- जुलाई 2023 के दौरान गंगा नदी के प्रयागराज खंड से मछली की लैंडिंग 21.05 टन थी, जो जून 2022 की तुलना में कुल मछली पकड़ में 45% की वृद्धि को दर्शाती है। जुलाई 2023 के लिए बिहार के पटना में गंगा नदी से मछली की लैंडिंग 1.37 टन थी।

बैठकें

- संस्थान के निदेशक ने पुरी (ओडिशा) में दिनांक 07-11 अगस्त, 2023 को वी2वी (व्यवहार्यता के प्रति संवेदनशीलता) : भारत में वैश्विक भागीदारी बैठक में भाग लिया।
- संस्थान के वैज्ञानिकों ने दिनांक 7 अगस्त 2023 को बामेती, पटना में मत्स्य पालन विभाग, बिहार सरकार द्वारा आयोजित "बिहार में जलाशय" पर एक दिवसीय कार्यशाला में भाग लिया।

विविध

- संस्थान ने मत्स्य पालन विभाग, झारखंड सरकार के अधिकारियों सहित हितधारकों और मछुआरों के साथ दिनांक 6-7 जुलाई, 2023 को बैठक आयोजित किया। इस बैठक का उद्देश्य कम उपयोग वाले जलाशयों में स्कैंपी मत्स्य पालन संवर्धन करना है। इस बैठक में 30 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

प्रशिक्षण कार्यक्रम

- संस्थान में दिनांक 02-08 अगस्त, 2023 के दौरान मुजफ्फरपुर, बिहार के किसानों के लिए "अन्तर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन" पर 7 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें मुजफ्फरपुर जिले के 30 किसानों ने भाग लिया।
- संस्थान में दिनांक 18 अगस्त 2023 को अनुसूचित जाति उप-योजना (एससीएसपी) और निक्रा परियोजना के तहत "अन्तर्स्थलीय मत्स्य पालन के माध्यम से सतत विकास लक्ष्य (एसडीजी) को संबोधित करते हुए आजीविका विकास" पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें पश्चिम बंगाल के विभिन्न जिलों से 15 मछुआरा सहकारी समितियों के 32 मछुआरा-सदस्यों ने भाग लिया।
- झारखंड में लालचंद घाट, राजमहल घाट, श्रीघर, गाज़ीपुर और कडपन्ना मछली घाट और पश्चिम बंगाल में बेनियाग्राम, फीडर नहर, तालतला और धुलियान घाट पर 10 हिल्सा और डॉल्फिन संरक्षण जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए गए। जागरूकता कार्यक्रमों में 146 मछुआरों की सक्रिय भागीदारी देखी गई।
- संस्थान ने दिनांक 19 अगस्त 2023 को सस्या श्यामला कृषि विज्ञान केंद्र, सोनारपुर, पश्चिम बंगाल के परिसर में ग्रामीण महिलाओं की आजीविका विकास के लिए सजावटी मछली पालन पर जागरूकता सह प्रदर्शन कार्यक्रम का आयोजन किया। इस कार्यक्रम में 22 महिला लाभार्थियों सहित 60 प्रतिभागियों ने भाग लिया।
- संस्थान ने दिनांक 20 अगस्त 2023 को दक्षिण 24 परगना जिले के कुलतली और संदेशखाली में अनुसूचित जाति उप-योजना (SCSP) और आदिवासी उप-योजना (STC) के तहत दो 'जागरूकता सह आदान वितरण कार्यक्रम' आयोजित किए जिनमें 150 मछली पालकों ने भाग लिया।
- संस्थान ने दिनांक 7 अगस्त, 2023 को एफबीएस, तमिलनाडु डॉ. जयललिता मत्स्य पालन विश्वविद्यालय, तमिलनाडु के बीबीए तृतीय वर्ष के छात्रों के लिए एक्सपोजर विजिट का आयोजन किया, जिसमें 12 छात्रों ने भाग लिया और संस्थान की विभिन्न प्रयोगशालाओं और सुविधाओं का दौरा किया।

अन्य

- फरक्का की ऊपरी क्षेत्र में 453 हिल्सा की रैनचिंग की गई। इनमें से 28 नमूनों के अभिगमन मार्ग के अध्ययन के लिए टैग किया गया था। रैनचिंग के दौरान हिल्सा का वजन 546 ग्राम (अधिकतम) से 47.8 ग्राम (न्यूनतम) दर्ज किया गया।
- भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के नाम पर ट्रेडमार्क आवेदन "CIFRI NutriFishIn" 12 अगस्त 2023 को क्लास-35 में भारतीय पेटेंट कार्यालय को आवेदन संख्या 6063896 के साथ दायर किया गया।

सिफरी समाचार पत्रों एवं संचार माध्यम में

চালু হল 'দুরন্ত বার্তা' অ্যাপ ডাউনলোড করুন প্লে-স্টোর থেকে

দুরন্ত বার্তা

সুচিকিৎসা

Volume No. 20, Issue No.: 264 Thursday, 24 August, 2023

সিফরীর তত্ত্বাবধানে কালনায় ন্যাশনাল রেঞ্চিং প্রোগ্রাম এর মাধ্যমে গঙ্গা নদীতে ছাড়া হলো মাছের চারা

২৩ আগস্ট ঃ তারিখে পশ্চিমবঙ্গের কালনার (পূর্ব বর্ধমান জেলা), মহিস্মর্দিনী ঘাটে আইসীএআর সিফরী ব্যারাকপুর দ্বারা 'ন্যাশনাল রিভার রেঞ্চিং প্রোগ্রাম ২০২৩'-এর অধীনে একটি রেঞ্চিং কর্মসূচি পরিচালিত করা হয়।৫ ই এপ্রিল ২০২৩ এ পশ্চিমবঙ্গের নবদ্বীপ থেকে এই কর্মসূচিটি শুরু করা হয়। ৩টি ভিন্ন রাজ্যর আলাদা অঞ্চল জুড়ে বিস্তৃত হয়েছে এই কর্মসূচিটি। এখনও পর্যন্ত এপ্রিল থেকে আগস্ট, ২০২৩ এর মধ্যে ২৭ লাখেরও বেশি মাছের চারা নদীতে ছাড়া হয়েছে। সিফরী র অধিকর্তা ডাঃ বি কে দাস, এবং ওনার নামামী গঙ্গা টিম এর সদস্যরা ভারতীয় মেজর কার্পের মোট ১.৫৬ লক্ষ উন্নত চারা (৪৫০ গ্রাম) নদীতে ছাড়েন। এই অনুষ্ঠানে স্থানীয় তফসিলি জাতি এবং উপজাতি সম্প্রদায়ের ৫৮ জন মৎস্যজীবী মহিলা এবং পুরুষ উপস্থিত ছিলেন। কালনার মহিষমর্দিনী ঘাটে উপস্থিত সবাই কে মাছ চাষ ও ডলফিন সংরক্ষণের ব্যাপারে সচেতন করা হয়। সিফরী র অধিকর্তা ডাঃ বি কে দাস আমাদের দৈনন্দিন জীবনে গঙ্গা নদীর গুরুত্ব তুলে ধরেন। তিনি

নদীর জলে কোনো রকম প্লাস্টিক ও অন্যান্য বর্জ্য পদার্থ না ফেলার জন্য স্থানীয় মানুষদের প্রতি আহ্বান আহ্বান জানান। এছাড়াও, তিনি মৎস্যজীবীদের ছোট মাছের চারা ও ব্রুড মাছ ধরা বন্ধ করতে বলেন। তিনি গত ৫ বছর ধরে সিফরীর দ্বারা পরিচালিত রেঞ্চিং কর্মসূচী, ও অন্যান্য উদ্যোগ সম্পর্কেও বলেন। গঙ্গা নদীর গুরুত্ব এবং ন্যাশনাল মিশন ফর ক্লিন গঙ্গার (নামামী গঙ্গে) কর্মসূচি স্থানীয় মস্যজীবী সম্প্রদায়ের কাছে তুলে ধরা হয় এই অনুষ্ঠানে।

ପ୍ରମେୟ

THE PRAMEYA

digital edition

RNI REGD NO: ODIODI/2011/37619 · POSTAL REGD NO: BN/208/23-25

24 AUGUST 2023 THURSDAY

www.prameya.com

ମତ୍ସ୍ୟଚାଷ ଗ୍ରାମୀଣ ମହିଳାଙ୍କୁ ସଶକ୍ତ କରିବ

କୋଲକାତା,୨୩।୮(ଆପ୍ର): ସୁନ୍ଦରବନ ଡେଲ୍ଟା ଅଞ୍ଚଳର ଏସ୍‌ଏଚ୍‌ଜିଏସ୍ ସହାୟତାରେ ୨୦୧୯ ମସିହାରୁ ପୋଖରୀରେ ମତ୍ସ ଚାଷ କରି ସ୍ଥାନୀୟ ଲୋକେ ସ୍ୱାବଲମ୍ବୀ ହୋଇଛନ୍ତି। ଚଳିତ ବର୍ଷ ମେ ମାସରେ, ୫ ହଜାର ମହିଳା ହିତାଧିକାରୀ ମଧ୍ୟ ସିଫ୍ରି ଦ୍ୱାରା ଗ୍ରହଣ କରାଯାଇଥିଲା। ଅଗଷ୍ଟ ୨୦, ୨୦୨୩ ମସିହାରେ, ୬ଟି ଗାଁର ଅନ୍ୟ ଶହେ ଜଣ ମହିଳା ହିତାଧିକାରୀ ହୋଇଛନ୍ତି। ପଶ୍ଚିମବଙ୍ଗର କୁଲତାଲି, ଦକ୍ଷିଣ ୨୪ ପ୍ରଗଣା, କୁଲତାଲି ମିଲନ୍ ତୀର୍ଥ ସୋସାଇଟି (ଉତ୍ତର ମାକାମେରିଆ, ଫୁଲମାଲଞ୍ଚା, ଚାରଭିଡ଼ିଆ)ଙ୍କ ସହଯୋଗରେ ମତ୍ସ୍ୟ ଚାଷ ଉପରେ ଏକ ସଚେତନତା କାର୍ଯ୍ୟକ୍ରମ ଏବଂ ଇନପୁଟ୍ ବଣ୍ଟନ ଆୟୋଜନ କରାଯାଇଥିଲା। ଏହି ସଚେତନତା କାର୍ଯ୍ୟକ୍ରମରେ ଡକ୍ଟର ବି ଦାସ, ନିର୍ଦ୍ଦେଶକ, ଆଇସିଏଆର-ସିଫ୍ରି ଛୋଟ ଆକାରର ଜଳଚର ଭୂମିକା ଉପରେ ଗୁରୁତ୍ୱାରୋପ କରିଥିଲେ। ଯାହା ସେମାନଙ୍କ ପଛପଟ ପୋଖରୀରେ ସରଳ ହସ୍ତକ୍ଷେପ ଦ୍ୱାରା ସେମାନଙ୍କର ପୁଷ୍ଟିକର ତଥା ଜୀବିକା ବୃଦ୍ଧି କରିବ। ତାଙ୍କର ହସ୍ତକ୍ଷେପର ଅତୀତର ଲାଭ ଏବଂ ଗ୍ରାମୀଣ ଚାଷୀଙ୍କ ସଫଳତା ବିଷୟରେ ମଧ୍ୟ ସେ କହିଥିଲେ। ସାମାଜିକ କର୍ମୀ ତଥା ସମାଜର ସଚିବ ଶ୍ରୀ ଲୋକିମାନ ମାଲ୍ଲା ଗ୍ରାମାଞ୍ଚଳର ଗରିବ ଲୋକଙ୍କ ସାମାଜିକ-ଅର୍ଥନୈତିକ ଅବସ୍ଥାକୁ ସୁଦୃଢ଼ କରିବାରେ ସିଫ୍ରିର ଭୂମିକା ଉପରେ ଗୁରୁତ୍ୱାରୋପ କରିଥିଲେ। ବୈଜ୍ଞାନିକ ତଥା ଇନ୍-ଚାର୍ଜର ଡକ୍ଟର ଲିଆଣ୍ଡ ମାଲୁୟା ଏହି ଅନୁଷ୍ଠାନର ଏସ୍‌ସିଏସ୍ପି କାର୍ଯ୍ୟକ୍ରମର ଭୂମିକା ବିଷୟରେ ବର୍ଣ୍ଣନା କରିଥିଲେ। ସଚେତନତା କାର୍ଯ୍ୟକ୍ରମ ପରେ ହିତାଧିକାରୀଙ୍କୁ ଇନପୁଟ୍ ବଣ୍ଟନ କରାଯାଇଥିଲା। ଶହେଟି ଗ୍ରାମୀଣ ମହିଳାଙ୍କ ମଧ୍ୟରେ ଇନପୁଟ୍, ମୁଖ୍ୟତଃ ମାଛ ଏବଂ ଖାଦ୍ୟ ବଣ୍ଟନ କରାଯାଇଥିଲା। ଡକ୍ଟର ଶ୍ରେୟା ଭଟ୍ଟାଚାର୍ଯ୍ୟ ସ୍ଥାନୀୟ ଭାଷାରେ ସହଯୋଗ ପାଇଁ ଅନୁଷ୍ଠାନର ଭୂମିକା ବିଷୟରେ ବର୍ଣ୍ଣନା କରିଥିଲେ। ବଣ୍ଟନ ପାଇଁ ଆବଶ୍ୟକ ବ୍ୟବସ୍ଥା କରିଥିଲେ।

Impact of Climate change on Inland Fisheries: ICAR-CIFRI study

Koraput,(KCN):Climate change is among the most important environmental challenges of the present century, with enduring consequences on aquatic ecosystem goods and services. It affects especially the poor and developing countries, which are more vulnerable and least capable of dealing with the adverse impacts. Most rural populations in developing countries depend on climate-sensitive sectors (including agriculture and fisheries) and natural resources, viz. freshwater, mangroves, coastal zones, and grasslands, for their income and livelihoods. Climate change threatens the sustainability of fisheries, livelihood and food security. Hence, SDG 13 calls to take urgent action to combat the impact of climate change. The fish production in India has touched an all-time high of 16.24 mmt (8% of global fish production), of which 12.12mmt come from the inland sector, and India is a global leader in inland open water fish production. The country is bestowed with vast and varied inland open waters, which form small-scale fisheries supporting many landless poor fishers. However, the growth of the open-water fisheries sector is threatened by multiple ... century (2001-2020), but in the last decade alone (2011-2022), it has increased by +1.09°C (IPCC, 2023). The frequency of extreme weather events, including droughts, cyclones, floods, heat waves etc., are increasing and are considered to have considerable impacts on fisheries. According to India's climate change forecasts, the surface air temperature has risen by 0.4°C in the last century. Climate data analysis along India's major river basins has shown a warming trend, decreased precipitation, and fluctuating seasonality of rainfall occurrence. The impact of climate change is likely to be mediated through changes in hydrology, temperature regime and its associated impacts. The vulnerability of fishers to climate change is based on their exposure to change, sensitivity and capacity to adapt. Climate change will likely affect fisher livelihoods through many pathways beyond the fishery sector alone. The drivers which impact inland fisheries and, consequently, the livelihoods of those dependent upon inland fisheries range across environmental, economic and social factors. Considering the above ... modules viz. natural resource management, improving crop production, livestock and fisheries and institutional interventions. The ICAR-Central Inland Fisheries Research Institute, Barrackpore initiated research on climate change in 2004 under the ICAR network project, "National Initiatives on Climate Resilient Agriculture" (NICRA) under the theme "Assessment of spawning behaviour of major fish species in an inland environment to harness the beneficial effect of temperature". The work encompassed over ten states in the country's eastern, central and northern parts. A quantum of research about climate change in major river basins, its impact on gonadal maturation, breeding and spawn availability in inland open waters, thermal tolerance of species, carbon sequestration in wetlands and vulnerability assessment etc. were carried out in Phase I (2004-2017). The studies indicated the annual rainfall in the Ganga basin has reduced by 257 to 580 mm and the mean air temperature has risen by 0.20 to 0.47 °C over the past three decades. The decreased availability of the fish spawn or seed

is the breeding period of the IMCs. The shift of the geographical distribution of some warm water fishes, including baile, puti, kakila and golshatengra to the colder area in the Ganga River system, clearly indicates that the colder area of the river has transformed to be congenial for warm water fishes due to climate change. A standalone software in the form of E-atlas was developed for Assam, West Bengal, Odisha, Bihar, Andhra Pradesh, Madhya Pradesh and Uttar Pradesh, integrating data on hatchery location, fish species, onset and period of breeding, spawn output of inland fish over the years. Under the study, advancement and extension of the breeding period of carp was reported by 40-60 days. The potential impact ... submergence of aquaculture areas in response to 1 to 2-meter rises due to seawater incursions. Assessment of the vulnerability of inland fisheries to climate variations in 13 districts of West Bengal state in India was studied. A composite vulnerability index (0.0-1.0) was developed based on functional relationships amongst sensitivity, exposure and adaptive capacity using 19 indicators related to inland fisheries. In Phase II "Impact of climate change in inland fisheries and development of adaptation strategies" in which the institute focussed on different aspects, viz. ecological and stakeholder-driven vulnerability assessment, reproductive vulnerability assessment, carbon sequestration potential, GHG emissions, ... development and demonstration of climate smart adaptation strategies in floodplain wetlands of Assam, West Bengal and Kerala (2017-2023). Climate Resilient Pen Systems was developed and demonstrated in 5 wetlands in 3 States for fish culture and conservation. Black clams, Pearl spot, pabda and golshatengra were found to be suitable for CRPS besides IMCs and minor carps. Natural spawning of the SIFs (mola, khoira, sorputi) was achieved in these pens. A hybrid method of index-based vulnerability comprising climate indicators with long-term quantitative data and stakeholder perceived vulnerability indicators specific to wetland fisheries was developed. Comparative evaluation ... Mapping indicated a reduction of watershed area (15-40%) in the wetlands of West Bengal due to sedimentation, encroachment and water stress. In the Ganga basin, significant reductions in depth and area (between 37.20 and 57.68%), diversity of native fish fauna in wetlands (between 22.85 and 54%), and transition from mesotrophic to eutrophic trophic states was observed. A case study in a seasonally open floodplain wetland in West Bengal, India, which became almost dry due to the shortfall of precipitation, which in turn resulted in a drastic reduction (41%) in fish production, loss of fish (17%), plankton (54%) and benthic (31%) diversity and increased of macrophytes coverage (80%). In the reproductive vulnerability study, novel parameters viz. Threshold GSI, Kspawn 50 (pre-spawning fitness), Girth spawn50 and associated climate optima were benchmarked for 10 fish species. Thermal and precipitation preferendum have been identified for each species alongside the threshold values of important limnological parameters necessary to facilitate natural spawning. Based on the study, species were ... carried out in wetlands of West Bengal, Assam and Kerala revealed significant accumulation of Carbon in the range of 11.14 MgC/ha to 157.29 MgC/ha. After the frequent extreme climatic events (i.e., Amphan in 2020 and Yaas in 2021), many rivers associated fisheries in the coastal area of West Bengal were destroyed resulting in loss of fish production due to the escape of many stocked fishes (bhekti, mullet, scampi, bagda chingri etc.). As a result, fish diversity decreased by 14.33% in the studied wetlands. Owing to livelihood loss, the migration of workers increased by 50.88% from the studied area. Periodic occurrence of inland heat waves under the 'caution' category was observed over a lower stretch of Ganga River and associated wetlands in West Bengal, with predominance during summer months (April-July). In the last 10 years, more than 40 research publications in reputed peer-reviewed national and international journals, books, success stories, policy papers, leaflets etc., have been published to disseminate the knowledge generated. The institute has made significant strides in climate change, and inland

Elevating rural women livelihoods of Sunderbans thro[ugh] ornamental fish culture: an initiatives of ICAR-CIFRI, Kolk[ata]

Kolkata: Ornamental fish farming, which was emphasised by the Honourable Prime Minister of India and is also being prioritized by PMSSY, is an enterprise to strengthen the household economy of rural women. Ornamental fish trade play a significant role in the Indian export as well as in the domestic market. ICAR-CIFRI has already started ornamental farming in different parts of India including West ...

2023, sensitization and input distribution programme on ... vulnerable section of the society. The programme was ... live-bearer fish, ornamental fish feed was distributed to 50 ... Scientist, CIFRI elabor[ated] the fi[sh] advantages ornamental culture being the other w... community. Bhattacharya p... a thorough demonstratio[n] explanation procedures maintaining ... bearer. beneficiary re... booklet writte[n] Bengali lang[uage] the pro... conclusion.

Fingerlings released at Kalna, West Bengal in river Ganga by CIFRI under National Ranching Programme

Kolkata,(KCN): A river ranching program under 'National River Ranching Programme-2023' was conducted by ICAR-Central Inland Fisheries Research Institute, Barrackpore at Mahismardini Ghat, Kalna (East Burdwan District), West Bengal on 23rd August, 2023. In continuation of the national river ranching programme which was initiated from 5th of April 2023 from Nabadwip, West Bengal the pragramme was carried out at different stretch spanning across 3 different states. Till date more than 27 lakhs of fish fingerlings were ranched during the period of April to August

,2023. During the event a total of 1.56 lakhs of advanced fingerlings (> 450g) of Indian Major Carps were released in the river by Dr. B. K. Das, Director, ICAR CIFRI along with CIFRI NMCG team members. The event was also marked by gathering of 58 number of local fisherwomen and fishermen from nearby areas belonging to SC/ST community. A mass awareness on sustainable fisheries and dolphin conservation was also conducted at Mahismardini Ghat, Kalna among the gathered fishers. Director ICAR CIFRI highlighted the importance of river Ganga in our daily life. He urged the local community not to throw any plastics and other anthropogenic waste in to the river water. Further, he also addressed the local fishers to avoid indiscriminate catching juvenile and brood fishes. He also said about the present ranching initiatives taken up by ICAR CIFRI from last 5years. The importance of River Ganga and the initiative taken by National Mission for Clean Ganga programe was also exhibited among the local fisher community.

রঙিন মাছ চাষে রুজির দিশা সিফরির

আজকালের প্রতিবেদন

রঙিন মাছ চাষ করে তফসিলি মহিলাদের উপার্জনের পথ দেখাচ্ছে আইসিএআর সিফরি। সংস্থার উদ্যোগে এই বিষয় নিয়ে দক্ষিণ ২৪ পরগনার সোনারপুরে আয়োজন করা হয় একটি অনুষ্ঠানের। সহযোগিতায় সোনারপুরের রামকৃষ্ণ মিশনের 'শস্য শ্যামলা কৃষি বিজ্ঞান কেন্দ্র'। অনুষ্ঠানে অংশ নেন ২২ জন মহিলা। রঙিন মাছ চাষ শুরু করতে এফআরপি ট্যাঙ্ক ও প্রাথমিক পর্যায়ের কিছু উপকরণ তুলে দেওয়া হয় তাঁদের হাতে।

রঙিন মাছ চাষের উপকরণ তুলে দেওয়া হচ্ছে। ছবি: আজকাল

অনুষ্ঠানে ছিলেন আইসিএআর সিফরির অধিকর্তা ড. বিকে দাস, সোনারপুর কৃষি বিজ্ঞান কেন্দ্রের তরফে ড. নারায়ণচন্দ্র সাহু। ড. বিকে দাস দেশের পূর্বাঞ্চলে রঙিন মাছ পালন এবং তা রপ্তানি করে উপার্জনের গুরুত্ব বোঝান। পাশাপাশি জানান, গ্রাম স্তরের কুটিরশিল্পের অগ্রগতিও হতে পারে এই মাছ চাষ করে। অনুষ্ঠানে রঙিন মাছ চাষের জন্য ইউনিট স্থাপনের একটি লাইভ প্রদর্শনী গ্রামীণ মহিলাদের দেখান ড. নারায়ণচন্দ্র সাহু। তিনি মনে করেন, সিফরি ও কৃষি বিজ্ঞান কেন্দ্রের এই যৌথ কর্মকাণ্ড গ্রামের মহিলা মৎস্যচাষিদের অর্থনৈতিকভাবে সহায়ক হবে।

प्रकाशन मंडल

प्रकाशक: बसन्त कुमार दास, निदेशक,

संकलन एवं सम्पादन: संजीव कुमार साहू, प्रवीण मौर्य, गणेश चंद्र, सुनीता प्रसाद एवं सुमेधा दास

फोटोग्राफी: सुजीत चौधरी एवं सम्बंधित वैज्ञानिक।

भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान,(आईएसओ 9001: 2015 प्रमाणित संगठन), बैरकपुर, कोलकाता, पश्चिम बंगाल 700120, भारत

दूरभाष: +91-33-25921190/91; फैक्स: +91-33-25920388; ई- मेल : director.cifri@icar.gov.in; वेबसाइट : www.cifri.res.in

ISSN 0970-616X

सिफरी मसिक समाचार में निहित सामग्री प्रकाशक की अनुमति के बिना किसी भी रूप में पुन: उत्पन्न नहीं की जा सकती है